Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed
Multidisciplinary Journal
Volume 4 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

अनूपपुर जिले में पारिस्थितिकीय पर्यटन विकास की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ-एक भौगोलिक अध्ययन

Challenges and Prospects of Ecotourism Development in Anuppur District: A Geographical Study

डॉ. एस.एम. प्रजापति
प्राध्यापक, भूगोल विभाग
शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुढ़ार, जिला–शहडोल (म.प्र.)

सारांश (Abstract)

पारिस्थितिकीय पर्यटन (Ecotourism) आज विश्व में सर्वाधिक तीव्रगति से विकसित होने वाला पर्यटन क्षेत्र है जो पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय समुदाय के आर्थिक उत्थान एवं सांस्कृतिक धरोहर के संवर्धन को एकसाथ संभव बनाता है। अनूपपुर जिला, मध्य प्रदेश में नर्मदा एवं सोन नदियों के उद्गम स्थल अमरकंटक, अचानकमार टाइगर रिजर्व, विशाल सागौन-साल वनों तथा बैगा-गोंड जनजातियों की अनूठी सांस्कृतिक विरासत के कारण पारिस्थितिकीय पर्यटन की असाधारण संभावनाओं से परिपूर्ण है। प्रस्तुत शोध पत्र में जिले में पारिस्थितिकीय पर्यटन की वर्तमान स्थिति, विद्यमान चुनौतियों एवं भावी संभावनाओं का भौगोलिक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में प्राथमिक सर्वेक्षण एवं द्वितीयक स्रोतों का उपयोग करते हुए पाया गया कि जिले में पर्यटक संख्या वर्ष 2022-23 में 13.37 लाख तक पहुँच गई है। परंतु अधोसंरचना की कमी, पर्यावरणीय दबाव, स्थानीय समुदाय की सीमित सहभागिता एवं प्रचार-प्रसार का अभाव पारिस्थितिकीय पर्यटन के समग्र विकास में बाधक हैं। यदि सुनियोजित नीतिगत हस्तक्षेप किया जाए तो अनूपपुर जिला मध्य भारत का प्रमुख पारिस्थितिकीय पर्यटन गंतव्य बन सकता है।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 4 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

मुख्य शब्द (Keywords)

पारिस्थितिकीय पर्यटन, अनूपपुर जिला, अमरकंटक, अचानकमार टाइगर रिजर्व, जनजातीय सांस्कृतिक पर्यटन, नर्मदा उद्गम, भौगोलिक अध्ययन, सतत् पर्यटन, जैव-विविधता, स्थानीय समुदाय सहभागिता।

1. प्रस्तावना-

21वीं शताब्दी में जब वैश्विक पर्यटन उद्योग की वार्षिक वृद्धि दर 4-5% है, पारिस्थितिकीय पर्यटन (Ecotourism) 10-15% की दर से विकसित हो रहा है। विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) की परिभाषा के अनुसार पारिस्थितिकीय पर्यटन वह यात्रा है जो प्राकृतिक क्षेत्रों में जाकर वहाँ के पर्यावरण, वन्यजीव एवं संस्कृति का अनुभव करते हुए स्थानीय संरक्षण एवं समुदाय के जीवन-स्तर को भी उन्नत करे। भारत, अपनी अद्वितीय जैव-विविधता, विशाल वन संपदा, सांस्कृतिक विरासत एवं भौगोलिक विविधता के कारण पारिस्थितिकीय पर्यटन के वैश्विक मानचित्र पर एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

मध्य प्रदेश, जिसे 'भारत का हृदय' कहा जाता है, पारिस्थितिकीय पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध राज्य है। यहाँ 11 राष्ट्रीय उद्यान, 25 वन्यजीव अभयारण्य एवं 6 टाइगर रिजर्व हैं। राज्य के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित अनूपपुर जिला अपनी पारिस्थितिकीय विशिष्टताओं के कारण विशेष महत्त्व रखता है। नर्मदा एवं सोन—भारत की दो महान नदियाँ—इसी जिले से उद्गमित होती हैं। अमरकंटक का नर्मदा उद्गम न केवल एक तीर्थस्थल है बल्कि मध्य भारत की पारिस्थितिकीय जीवनरेखा का स्रोत भी है। जिले का अधिकांश भाग अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फीयर रिजर्व में सम्मिलित है जो इसे पारिस्थितिकीय पर्यटन के लिए विशिष्ट एवं उपयुक्त बनाता है।

बावजूद इसके, अनूपपुर जिले में पारिस्थितिकीय पर्यटन की असीमित संभावनाएँ अभी पूर्णतः विकसित नहीं हो पाई हैं। भौगोलिक अलगाव, अधोसंरचनात्मक कमियाँ, पर्यावरणीय संवेदनशीलता एवं नीतिगत समन्वय का अभाव इसकी प्रमुख बाधाएँ हैं। इस संदर्भ में प्रस्तुत शोध पत्र जिले के पारिस्थितिकीय पर्यटन का वैज्ञानिक एवं भौगोलिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. शोध पत्र के उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नानुसार निर्धारित किए गए हैं। **प्रथम** उद्देश्य है—अनूपपुर जिले की भौगोलिक, पारिस्थितिकीय एवं सांस्कृतिक विशेषताओं का विवेचन करना जो पारिस्थितिकीय पर्यटन के लिए अनुकूल हैं। **द्वितीय** उद्देश्य है—जिले में पर्यटन के वर्तमान परिदृश्य एवं स्थल-विशेष पर्यटक संख्या का आकलन करना। **तृतीय** उद्देश्य है—पारिस्थितिकीय पर्यटन विकास के मार्ग में आने वाली भौगोलिक एवं प्रशासनिक चुनौतियों की पहचान करना। **चतुर्थ** उद्देश्य है—जिले में पारिस्थितिकीय पर्यटन की दीर्घकालीन संभावनाओं को उजागर करना। **पंचम** उद्देश्य है—पर्यटन से स्थानीय समुदाय को मिलने वाले आर्थिक लाभ का विश्लेषण करना एवं सतत् पर्यटन विकास हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

3. शोध पत्र का महत्व-

अनूपपुर जिला मध्य प्रदेश के आकांक्षी जिलों में सम्मिलित है जहाँ जनजातीय जनसंख्या की अधिकता एवं पारम्परिक रोजगार की सीमितता दो बड़ी चुनौतियाँ हैं। पारिस्थितिकीय पर्यटन इस जिले के लिए एक ऐसा विकल्प है जो पर्यावरण को क्षति पहुँचाए बिना स्थानीय आजीविका का संवर्धन कर सकता है। प्रस्तुत अध्ययन पर्यटन विभाग, वन विभाग, जिला प्रशासन एवं नीति-निर्माताओं को जिले की पर्यटन क्षमता का वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

यह शोध इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फीयर रिजर्व, जो मेघालय को मध्य भारत से जोड़ने वाले हरित गलियारे का अंग है, पारिस्थितिकीय दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील एवं जैव-विविध क्षेत्र है। इस क्षेत्र में पर्यटन विकास यदि अनियंत्रित हुआ तो अपूरणीय क्षति हो सकती है; अतः इस अध्ययन में सतत् (Sustainable) पारिस्थितिकीय पर्यटन के उन मॉडलों पर बल दिया गया है जो संरक्षण एवं विकास का संतुलन बनाए रखें। राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2022 एवं सतत् विकास लक्ष्य-8 (आर्थिक विकास एवं रोजगार) तथा लक्ष्य-15 (भूमि पर जीवन) की प्राप्ति में भी यह अध्ययन योगदान दे सकता है।

4. शोध प्रविधि-

प्रस्तुत शोध पत्र वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं क्षेत्र-आधारित शोध पद्धति पर आधारित है।

4.1 प्राथमिक स्रोत-

जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों—अमरकंटक, अचानकमार, कपिलधारा, दुग्धधारा एवं सोनमुडा—पर क्षेत्र सर्वेक्षण किया गया। यादृच्छिक नमूना पद्धति (Random Sampling) से 180 पर्यटकों, 60 स्थानीय व्यवसायियों एवं 30 वन एवं पर्यटन विभाग के अधिकारियों से संरचित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार के माध्यम से आँकड़े एकत्र किए गए। इसके अतिरिक्त बैगा एवं गोंड जनजातीय ग्रामों में केंद्रित समूह चर्चा (FGD) आयोजित की गई।

4.2 द्वितीयक स्रोत

म.प्र. पर्यटन विकास निगम के वार्षिक प्रतिवेदन, जिला पर्यटन कार्यालय अनूपपुर के अभिलेख, भारतीय वन सर्वेक्षण (FSI) के आँकड़े, UNESCO बायोस्फीयर रिजर्व दस्तावेज, जनगणना 2011 एवं 2021 (अनंतिम), राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2022 तथा विविध शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित अध्ययनों का उपयोग किया गया।

4.3 विश्लेषण पद्धति-

संकलित आँकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक सांख्यिकी—प्रतिशत वितरण, तुलनात्मक सारणियाँ, वृद्धि दर गणना—के माध्यम से किया गया है। भौगोलिक वितरण दर्शाने हेतु स्थलवार एवं वर्षवार आँकड़ों का तुलनात्मक प्रस्तुतीकरण किया गया है।

5. अनूपपुर जिले की भौगोलिक पृष्ठभूमि-

अनूपपुर जिला मध्य प्रदेश के पूर्वी भाग में 22°40' से 23°31' उत्तरी अक्षांश एवं 81°17' से 82°14' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। जिले का कुल क्षेत्रफल 3,747 वर्ग किलोमीटर है। यह जिला अक्टूबर 2003 में शहडोल जिले से पृथक होकर अस्तित्व में आया। जिले की उत्तर सीमा शहडोल से, पूर्व में छत्तीसगढ़ राज्य से, दक्षिण में मंडला एवं डिंडोरी जिलों से तथा पश्चिम में डिंडोरी जिले से मिलती है।

भौगोलिक संरचना की दृष्टि से जिले का अधिकांश भाग मैकल पर्वतश्रेणी एवं विंध्यन पठार का संक्रमण क्षेत्र है। अमरकंटक की ऊँचाई समुद्र तल से 1,065 मीटर है। जिले का 52% से अधिक क्षेत्र वनाच्छादित है। नर्मदा, सोन, जोहिला एवं बंजर नदियाँ जिले की प्रमुख जलधाराएँ हैं। जिले की जनसंख्या का लगभग 57% अनुसूचित जनजाति (बैगा, गोंड,

कोल) से संबंधित है। बैगा जनजाति विशेष पिछड़ी जनजाति (PVTG) के रूप में अधिसूचित है। जिले की यह जनजातीय विशिष्टता एवं वन संपदा पारिस्थितिकीय पर्यटन को विशेष बनाती है।

6. अनूपपुर जिले में पारिस्थितिकीय पर्यटन की वर्तमान स्थिति-

अनूपपुर जिले में पारिस्थितिकीय पर्यटन के अंतर्गत धार्मिक-प्राकृतिक स्थल, वन्यजीव पर्यटन एवं जनजातीय सांस्कृतिक पर्यटन के तीनों आयाम विद्यमान हैं। अमरकंटक, जो जिले का सर्वप्रमुख पर्यटन केंद्र है, वर्ष 2022-23 में 5.18 लाख से अधिक पर्यटकों को आकर्षित कर चुका है। COVID-19 महामारी के कारण 2020-21 में पर्यटक संख्या में भारी गिरावट आई थी परंतु तत्पश्चात् पुनर्उत्थान की प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से दिखती है।

सारणी 1

अनूपपुर जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर आगंतुक संख्या (2019-20 से 2022-23)

क्र.	पर्यटन स्थल	**2019-20**	2020-21	2021-22	2022-23
1	अमरकंटक (नर्मदा उद्गम)	**4,82,360**	1,24,180	2,96,740	5,18,420
2	माई की बगिया एवं कपिलधारा	**3,64,820**	98,640	2,18,560	4,02,140
3	दुग्धधारा जलप्रपात	**1,28,460**	32,180	84,320	1,42,680
4	सोनमुडा (सोन उद्गम)	**82,340**	18,460	54,280	96,480
5	जल्पा देवी मंदिर	**64,180**	14,820	42,160	74,360
6	श्री यंत्र मंदिर परिसर	**48,620**	11,240	32,480	58,940
7	अचानकमार वन्यजीव अभयारण्य	**32,840**	8,640	22,180	44,280

योग	सम्पूर्ण जिला	**12,03,620**	3,08,160	7,50,720	13,37,300

स्रोत: जिला पर्यटन कार्यालय, अनूपपुर एवं म.प्र. पर्यटन विकास निगम, 2022-23।

सारणी 1 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कोविड-पूर्व (2019-20) की तुलना में 2022-23 में जिले की समग्र पर्यटक संख्या 12.04 लाख से बढ़कर 13.37 लाख हो गई है जो 11.1% की वृद्धि दर्शाती है। अमरकंटक एकल स्थल के रूप में कुल पर्यटकों का 38.8% आकर्षित करता है। माई की बगिया एवं कपिलधारा संयुक्त रूप से दूसरे महत्त्वपूर्ण गंतव्य हैं। सबसे कम पर्यटक अचानकमार वन्यजीव अभयारण्य में आते हैं (44,280) जो वन्यजीव पर्यटन की अपार अविकसित संभावना को इंगित करता है। दुग्धधारा एवं सोनमुडा में पर्यटक वृद्धि दर सर्वाधिक है जो इन स्थलों की बढ़ती लोकप्रियता दर्शाती है।

7. अनूपपुर जिले में पारिस्थितिकीय पर्यटन विकास की चुनौतियाँ-

अनूपपुर जिले में पारिस्थितिकीय पर्यटन के विकास के मार्ग में अनेक बहुआयामी चुनौतियाँ हैं जिनका भौगोलिक एवं प्रशासनिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण आवश्यक है।

सारणी 2

अनूपपुर जिले में पारिस्थितिकीय पर्यटन विकास की प्रमुख चुनौतियाँ

क्र.	चुनौती	प्रभाव एवं विवरण
1	अधोसंरचना का अभाव	पर्यटन स्थलों तक पहुँचने वाले मार्ग, आवासीय सुविधाएँ एवं संचार व्यवस्था पर्याप्त नहीं हैं।
2	पर्यावरणीय प्रदूषण एवं अतिक्रमण	अमरकंटक एवं नर्मदा उद्गम के आसपास कूड़ा प्रबंधन की अपर्याप्त व्यवस्था पर्यावरण को क्षति पहुँचा रही है।

3	स्थानीय समुदाय की सीमित भागीदारी	जनजातीय एवं स्थानीय समुदाय पर्यटन आय से पर्याप्त रूप से लाभान्वित नहीं हो पा रहे हैं।
4	कुशल मानव संसाधन का अभाव	पर्यटन प्रबंधन, गाइड प्रशिक्षण एवं आतिथ्य क्षेत्र में प्रशिक्षित जनशक्ति का अभाव है।
5	वन कानूनों की जटिलता	अचानकमार जैसे संरक्षित क्षेत्रों में पर्यटन गतिविधियों पर कड़े प्रतिबंध विकास में बाधक हैं।
6	मौसमी पर्यटन पर निर्भरता	अधिकांश पर्यटन अक्टूबर से मार्च के मध्य केंद्रित होने से वर्षभर आय असंभव हो जाती है।
7	प्रचार-प्रसार की कमी	जिले के पर्यटन स्थलों का राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्याप्त विपणन नहीं हो रहा है।
8	प्रबंधन एवं समन्वय का अभाव	पर्यटन, वन, राजस्व एवं पंचायत विभागों के मध्य समन्वय की कमी योजनाओं के क्रियान्वयन में बाधक है।

स्रोत: क्षेत्रीय सर्वेक्षण एवं जिला पर्यटन कार्यालय, अनूपपुर, 2022-23।

7.1 अधोसंरचना का गंभीर अभाव-

अनूपपुर जिले में पर्यटन के विकास की सबसे बड़ी भौतिक बाधा अधोसंरचना की अपर्याप्तता है। अमरकंटक तक पहुँचने वाले मार्ग—विशेषतः पेंड्रा रोड से अमरकंटक और अनूपपुर से अमरकंटक—पहाड़ी एवं संकरे हैं। जिले में तारांकित होटलों की संख्या नगण्य है; अधिकांश आवास व्यवस्था निजी धर्मशालाओं एवं अल्पसुविधायुक्त लॉजों तक सीमित है। चिकित्सा सुविधाएँ, ATM नेटवर्क एवं मोबाइल कनेक्टिविटी भी सुदूर क्षेत्रों में अपर्याप्त है।

7.2 पर्यावरणीय दबाव एवं वहन क्षमता की समस्या-

अमरकंटक में धार्मिक पर्यटन की अनियंत्रित वृद्धि ने नर्मदा उद्गम कुण्ड एवं आसपास के क्षेत्र पर गंभीर पर्यावरणीय दबाव डाला है। पूजा सामग्री, प्लास्टिक कचरा एवं अनुपचारित अपशिष्ट जल का नर्मदा नदी में प्रवाह उद्गम क्षेत्र की पारिस्थितिकी को क्षति पहुँचा रहा है। अचानकमार में पर्यटक भार एवं सफारी वाहनों के शोर ने वन्यजीवों के प्राकृतिक व्यवहार को प्रभावित किया है। वहन क्षमता (Carrying Capacity) का अनुमान एवं उसके अनुरूप पर्यटक प्रबंधन अभी तक प्रभावी रूप से नहीं हो पाया है।

7.3 स्थानीय समुदाय की परिधीय भागीदारी-

जिले में पारिस्थितिकीय पर्यटन से उत्पन्न आय का बड़ा हिस्सा बाहरी व्यापारियों, होटल मालिकों एवं टूर ऑपरेटरों के पास चला जाता है। बैगा एवं गोंड जनजातीय समुदाय जो जिले की सबसे बड़ी सांस्कृतिक संपदा हैं, पर्यटन आय से लगभग वंचित हैं। सर्वेक्षण में पाया गया कि केवल 12% पर्यटकों ने स्थानीय जनजातीय उत्पाद खरीदे। इस सामाजिक-आर्थिक असंतुलन को दूर किए बिना सतत् पारिस्थितिकीय पर्यटन संभव नहीं है।

7.4 मौसमी असंतुलन-

जिले में पर्यटन का 70% से अधिक अक्टूबर से मार्च के मध्य केंद्रित है। वर्षाकाल (जून-सितंबर) में सड़कों की खराब स्थिति एवं जंगल में प्रवेश प्रतिबंध के कारण पर्यटन लगभग ठप हो जाता है। इस मौसमी निर्भरता के कारण स्थानीय होटल एवं गाइड व्यवसाय को वर्षभर स्थायी आय नहीं मिल पाती।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed
Multidisciplinary Journal
Volume 4 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

7.5 वन कानूनों एवं संरक्षण नीतियों की जटिलता-

अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फीयर रिजर्व एवं अचानकमार टाइगर रिजर्व में पर्यटन गतिविधियों पर Wild Life Protection Act 1972, Forest Rights Act 2006 एवं बायोस्फीयर रिजर्व नियमों के अंतर्गत कड़े प्रतिबंध हैं। इन नियामक जटिलताओं के कारण निजी निवेश पर्यटन क्षेत्र से दूर रहता है और नई पर्यटन सुविधाओं का विकास अवरुद्ध रहता है।

8. अनूपपुर जिले में पारिस्थितिकीय पर्यटन विकास की संभावनाएँ-

अपनी अनूठी भौगोलिक स्थिति, जैव-विविधता, धार्मिक महत्ता एवं जनजातीय संस्कृति के कारण अनूपपुर जिले में पारिस्थितिकीय पर्यटन की विशाल एवं बहुआयामी संभावनाएँ हैं।

सारणी 3

अनूपपुर जिले में पारिस्थितिकीय पर्यटन की प्रमुख संभावनाएँ

क्र.	संभावना	विवरण/अवसर
1	नर्मदा उद्गम की आध्यात्मिक पहचान	अमरकंटक का नर्मदा उद्गम करोड़ों हिंदुओं की आस्था का केंद्र है जो वर्षभर तीर्थ-पर्यटन की अपार संभावना देता है।
2	वन्यजीव एवं जैव-विविधता पर्यटन	अचानकमार टाइगर रिजर्व एवं घने सागौन-साल वन में वन्यजीव सफारी, बर्ड-वॉचिंग एवं ट्रेकिंग की विशाल संभावनाएँ हैं।
3	जनजातीय सांस्कृतिक पर्यटन	बैगा, गोंड जनजातियों की विशिष्ट लोक-कला, नृत्य, शिल्प एवं जीवन-शैली सांस्कृतिक पर्यटन का आधार बन सकती है।
4	जलप्रपात एवं साहसिक पर्यटन	कपिलधारा, दुग्धधारा एवं सोनमुडा में रैपलिंग, रॉक-क्लाइम्बिंग एवं ट्रेकिंग से युवा-पर्यटन आकर्षित किया जा सकता है।

5	आयुर्वेद एवं वेलनेस पर्यटन	अमरकंटक की जड़ी-बूटी समृद्धि एवं प्राकृतिक वातावरण वेलनेस रिट्रीट एवं योग केंद्रों के लिए आदर्श है।
6	रेल संपर्क का लाभ	कटनी-बिलासपुर रेलमार्ग पर अनूपपुर जंक्शन की स्थिति पर्यटकों की सुगम पहुँच संभव बनाती है।
7	डिजिटल एवं फिल्म-पर्यटन	अमरकंटक की फिल्म-शूटिंग सुविधा एवं सोशल मीडिया प्रचार से नई पीढ़ी के पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है।

स्रोत: क्षेत्रीय सर्वेक्षण, म.प्र. पर्यटन विकास निगम एवं वन विभाग, अनूपपुर, 2022-23।

8.1 नर्मदा उद्गम की वैश्विक आध्यात्मिक पहचान-

अमरकंटक को 'नर्मदा की माँ' कहा जाता है। यह स्थल न केवल मध्य प्रदेश बल्कि सम्पूर्ण भारत के करोड़ों हिंदुओं की आस्था का केंद्र है। नर्मदा परिक्रमा मार्ग के तीर्थयात्री, योग साधक एवं ध्यान प्रेमी यहाँ आध्यात्मिक शांति की खोज में आते हैं। इस आध्यात्मिक पहचान को आयुर्वेद, योग एवं ध्यान केंद्रों से जोड़कर एक समृद्ध वेलनेस पर्यटन सर्किट विकसित किया जा सकता है।

8.2 अचानकमार टाइगर रिजर्व में वन्यजीव पर्यटन-

अचानकमार टाइगर रिजर्व (557.55 वर्ग किमी) में बाघ, तेंदुआ, गौर, सांभर, चीतल, जंगली भैंसा एवं 250 से अधिक पक्षी प्रजातियाँ विद्यमान हैं। इस रिजर्व में वन्यजीव सफारी, नेचर वॉक, बर्ड-वॉचिंग एवं नाइट सफारी की अपार संभावनाएँ हैं। तुलनात्मक रूप से कम प्रसिद्ध होने के कारण यहाँ पर्यटक भीड़ कम है जो उच्च-मूल्य, कम-प्रभाव पर्यटन (High Value Low Volume Tourism) के लिए आदर्श स्थिति है।

8.3 बैगा जनजातीय सांस्कृतिक पर्यटन-

बैगा जनजाति, जो भारत की सर्वाधिक विशिष्ट एवं आदिम जनजातियों में से एक है, अपनी अनूठी गोदना (Tattoo) परम्परा, भूमि से जुड़े आध्यात्मिक विश्वासों, बैगानी नृत्य एवं वन-आधारित जीवन-शैली के लिए विश्वभर

में जानी जाती है। इस जनजातीय विरासत को सांस्कृतिक पर्यटन का आधार बनाकर 'बैगा-होमस्टे' एवं 'ट्राइबल हेरिटेज ट्रेल' जैसी पहल शुरू की जा सकती है।

8.4 साहसिक एवं जलप्रपात पर्यटन-

कपिलधारा (23 मीटर ऊँचाई), दुग्धधारा एवं सोनमुडा के जलप्रपात ट्रेकिंग, रैपलिंग एवं फोटोग्राफी पर्यटन के लिए अत्यंत आकर्षक हैं। इन स्थलों पर युवा-पर्यटन एवं साहसिक खेल विकसित करके मौसमी पर्यटन की निर्भरता को कम किया जा सकता है।

8.5 पर्यटन से स्थानीय आर्थिक लाभ-

सारणी 4

अनूपपुर जिले में पर्यटन से स्थानीय आर्थिक लाभ (₹ लाख में)

क्र.	आय का स्रोत / क्षेत्र	2020-21 (₹ लाख)	2022-23 (₹ लाख)	वृद्धि दर (%)
1	होटल एवं लॉज व्यवसाय	84.20	198.60	135.9
2	स्थानीय परिवहन (ऑटो/टैक्सी)	42.80	96.40	125.2
3	हस्तशिल्प एवं स्मृति चिह्न	18.60	48.20	159.1
4	खाद्य एवं पेय प्रतिष्ठान	56.40	134.80	139.0
5	पुजारी एवं धार्मिक सेवाएँ	24.80	52.60	112.1
6	वन आधारित उत्पाद विक्रय	12.40	32.80	164.5
योग	कुल पर्यटन आय	239.20	563.40	135.5

स्रोत: जिला उद्योग एवं वाणिज्य केंद्र, अनूपपुर एवं क्षेत्रीय सर्वेक्षण, 2022-23।

Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed Multidisciplinary Journal
Volume 4 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

सारणी 4 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 2020-21 से 2022-23 के मध्य जिले की कुल पर्यटन आय ₹239.20 लाख से बढ़कर ₹563.40 लाख हो गई जो 135.5% की उल्लेखनीय वृद्धि है। वन-आधारित उत्पाद विक्रय में सर्वाधिक वृद्धि दर (164.5%) दर्ज की गई है जो स्थानीय वनोपज की बढ़ती माँग को दर्शाती है। हस्तशिल्प एवं स्मृति चिह्न क्षेत्र में भी 159.1% वृद्धि हुई है। यह आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि पर्यटन की वृद्धि से स्थानीय अर्थव्यवस्था को महत्त्वपूर्ण लाभ मिल रहा है और यदि इसे और सुनियोजित किया जाए तो यह लाभ कई गुना बढ़ सकता है।

9. पारिस्थितिकीय पर्यटन से संबंधित शासकीय योजनाएँ एवं पहल-

केन्द्र एवं राज्य सरकार की विविध योजनाएँ अनूपपुर जिले में पारिस्थितिकीय पर्यटन को प्रोत्साहित करने की दिशा में क्रियान्वित हो रही हैं।

सारणी 5

अनूपपुर जिले में पारिस्थितिकीय पर्यटन से संबंधित प्रमुख शासकीय योजनाएँ

क्र.	योजना / परियोजना	वित्त पोषण स्रोत	प्रमुख कार्य / लक्ष्य
1	स्वदेश दर्शन योजना (चरण-2)	केन्द्र सरकार	अमरकंटक में पर्यटन अधोसंरचना सुदृढ़ीकरण
2	प्रसाद योजना	केन्द्र सरकार	तीर्थ स्थल विकास एवं सुविधा केंद्र निर्माण
3	म.प्र. इको-टूरिज्म विकास निगम	राज्य सरकार	पर्यावरण-अनुकूल आवास व गाइड प्रशिक्षण
4	वन ग्राम विकास योजना	वन विभाग/CAMPA	बैगा ग्रामों में इको-टूरिज्म इकाइयाँ
5	PMGSY (सड़क संपर्क)	केन्द्र सरकार	पर्यटन क्षेत्रों तक सड़क निर्माण

6	डिजिटल इंडिया-पर्यटन	MeitY/पर्यटन मंत्रालय	ऑनलाइन बुकिंग, QR कोड पर्यटन सूचना

स्रोत: जिला पर्यटन कार्यालय, अनूपपुर एवं म.प्र. इको-टूरिज्म विकास निगम, 2022-23।

सारणी 5 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि केंद्र एवं राज्य स्तर पर अनेक योजनाएँ जिले में पर्यटन अधोसंरचना विकास के लिए क्रियान्वित हैं। स्वदेश दर्शन योजना चरण-2 एवं प्रसाद योजना के अंतर्गत अमरकंटक में पर्यटन सुविधाओं के विस्तार के लिए करोड़ों रुपये आवंटित किए गए हैं। म.प्र. इको-टूरिज्म विकास निगम द्वारा वन ग्रामों में पर्यावरण-अनुकूल आवास इकाइयाँ विकसित की जा रही हैं। इन योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन जिले के पारिस्थितिकीय पर्यटन को नई ऊँचाई दे सकता है।

10. निष्कर्ष-

प्रस्तुत शोध अध्ययन से निष्कर्ष के रूप में निम्नलिखित तथ्य सामने आए हैं। अनूपपुर जिला पारिस्थितिकीय पर्यटन की दृष्टि से मध्य भारत का सर्वाधिक संभावनापूर्ण जिलों में से एक है। नर्मदा एवं सोन नदियों का उद्गम, अचानकमार टाइगर रिजर्व, विशाल वन क्षेत्र एवं बैगा-गोंड जनजातीय संस्कृति इस जिले को विशिष्ट पारिस्थितिकीय पर्यटन पहचान प्रदान करती है।

जिले में 2022-23 में 13.37 लाख पर्यटक आए एवं पर्यटन आय ₹563.40 लाख रही जो कोविड-पूर्व स्तर से भी अधिक है। यह जिले की पर्यटन क्षमता की पुष्टि करता है। परंतु अधोसंरचना का अभाव, पर्यावरणीय दबाव, स्थानीय समुदाय की परिधीय भागीदारी एवं मौसमी असंतुलन जैसी चुनौतियाँ पारिस्थितिकीय पर्यटन की पूर्ण क्षमता को अवरुद्ध कर रही हैं। वन्यजीव पर्यटन, जनजातीय सांस्कृतिक पर्यटन, वेलनेस-आयुर्वेद पर्यटन एवं साहसिक पर्यटन चार ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें तत्काल निवेश एवं नीतिगत ध्यान देकर अनूपपुर जिले को मध्य भारत का प्रमुख पारिस्थितिकीय पर्यटन गंतव्य बनाया जा सकता है।

11. सुझाव-

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित व्यावहारिक एवं नीतिगत सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं।

प्रथम, अमरकंटक एवं अचानकमार तक पहुँचने वाले प्रमुख मार्गों को चौड़ा एवं सुदृढ़ किया जाए तथा प्रमुख पर्यटन स्थलों पर स्वच्छ पेयजल, शौचालय, पार्किंग एवं सूचना केंद्र की व्यवस्था की जाए।

द्वितीय, अमरकंटक में 'ग्रीन जोन' घोषित कर प्लास्टिक उपयोग पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाया जाए एवं Solid Waste Management की आधुनिक व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

तृतीय, बैगा एवं गोंड जनजातियों के ग्रामों में 'Tribal Homestay' योजना लागू की जाए जिसमें आय का प्रत्यक्ष लाभ परिवार को मिले।

चतुर्थ, जिले में पर्यटन, वन, राजस्व एवं पंचायत विभागों के मध्य एकीकृत पर्यटन प्रबंधन समिति (IDTMC) गठित की जाए।

पंचम, अचानकमार टाइगर रिजर्व में Carrying Capacity का वैज्ञानिक निर्धारण करके पर्यटक संख्या को नियंत्रित किया जाए एवं उच्च-मूल्य, कम-प्रभाव पर्यटन को प्रोत्साहित किया जाए।

षष्ठ, 'अमरकंटक-सोनमुडा-अचानकमार इको-टूरिज्म सर्किट' विकसित किया जाए ताकि पर्यटक एक ही यात्रा में जिले के सभी प्रमुख स्थलों का भ्रमण कर सकें।

सप्तम, जिले में स्थानीय युवाओं को पर्यटन गाइड, इको-टूर ऑपरेटर एवं हस्तशिल्प उद्यमी के रूप में प्रशिक्षित करने के लिए ।TI एवं कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से विशेष पाठ्यक्रम चलाए जाएँ। अष्टम, वर्षाकालीन पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए 'मानसून ट्रेक' एवं 'मानसून वाटरफॉल टूर' जैसे विशेष पैकेज विकसित किए जाएँ।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, सुरेन्द्र (2020). पारिस्थितिकीय पर्यटन: सिद्धांत एवं व्यवहार। नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स।
2. चतुर्वेदी, रजनीकांत एवं तिवारी, नरेन्द्र (2021). मध्य प्रदेश में जनजातीय पर्यटन: संभावनाएँ एवं नीतिगत पक्ष। भोपाल: म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी।
3. जिला पर्यटन कार्यालय, अनूपपुर (2023). पर्यटन सांख्यिकी प्रतिवेदन 2022-23। अनूपपुर: जिला प्रशासन।
4. तिवारी, विजय कुमार (2019). अमरकंटक का भौगोलिक एवं पारिस्थितिकीय अध्ययन। रीवा: अ.प्र.सिं. विश्वविद्यालय शोध प्रकाशन।

5. द्विवेदी, हरिशंकर (2020). मध्य प्रदेश के वन एवं जनजातीय क्षेत्र। भोपाल: म.प्र. जनजातीय अनुसंधान एवं विकास संस्थान।
6. म.प्र. इको-टूरिज्म विकास निगम (2022). वार्षिक प्रतिवेदन 2021-22। भोपाल: म.प्र. शासन।
7. म.प्र. वन विभाग (2022). अचानकमार टाइगर रिजर्व प्रबंधन योजना 2022-31। भोपाल: वन विभाग।
8. म.प्र. पर्यटन विकास निगम (2023). मध्य प्रदेश पर्यटन आँकड़े 2022-23। भोपाल: MPSTDC।
9. मिश्रा, अनिल एवं शुक्ल, सुमन (2022). विंध्यन क्षेत्र में पर्यटन विकास की संभावनाएँ। भौगोलिक समीक्षा, 48(2), 78-94।
10. शर्मा, दीपक एवं पटेल, रमेश (2021). बैगा जनजाति: संस्कृति एवं पहचान। जबलपुर: नर्मदा प्रकाशन।
11. सिंह, मनोज कुमार (2020). जनजातीय क्षेत्रों में सतत् पर्यटन विकास। भूगोल एवं पर्यावरण शोध पत्रिका, 12(1), 34-52।
12. Bhuiyan, M.A.H. et al. (2021). Ecotourism and Conservation in Protected Areas. Journal of Sustainable Tourism, 29(4), 512-528.
13. Honey, M. (2008). Ecotourism and Sustainable Development: Who Owns Paradise? (2nd ed.). Washington: Island Press.
14. IUCN (2020). Guidelines for the Application of IUCN Protected Area Management Categories. Gland: IUCN.
15. Ministry of Tourism, GoI (2022). National Tourism Policy 2022. New Delhi: Government of India.
16. UNESCO (2019). Achanakmar-Amarkantak Biosphere Reserve: Periodic Review Report. Paris: UNESCO.
17. UNWTO (2023). Tourism Highlights 2023 Edition. Madrid: World Tourism Organization.